भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या - 490
उत्तर दिनांक 23/07/2026 को दिया गया

झारखंड में यूरेनियम खनन का स्वास्थ्य पर प्रभाव

490. श्रीमती महुआ माजी

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :-

(क) क्या सरकार ने पिछले पांच वर्षों के दौरान झारखंड में यूरेनियम खनन और प्रसंस्करण क्षेत्र में और उसके आसपास रहने वाले लोगों पर स्वास्थ्य, पर्यावरण और विकिरण सुरक्षा के प्रभावों के संबंध में कोई वैज्ञानिक अध्ययन या स्वतंत्र मूल्यांकन कराया है;

(ख) यदि हाँ, तो उसके प्रमुख निष्कर्ष क्या हैं और उसके आधार पर झारखंड में कौन-कौन से सुधारात्मक एवं एहतियाती कदम उठाए गए हैं; और

(ग) क्या सरकार इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य निगरानी, सुरक्षित पेयजल, पर्यावरणीय निगरानी तथा स्थानीय समुदाय के कल्याण के लिए कोई दीर्घकालिक कार्ययोजना लागू कर रही है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधानमंत्री कार्यालय (डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) व (ख) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) की स्वास्थ्य भौतिकी इकाई (एचपीयू) यूरेनियम खनन के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए खनन सुविधाओं के आस-पास नियमित रूप से पर्यावरणीय निगरानी करती है। यूसीआईएल परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (एईआरबी) नियामक निरीक्षण के अंतर्गत अपनी खनन और प्रसंस्करण गतिविधियां संचालित करता है और एईआरबी, खान सुरक्षा महानिदेशालय (डीजीएमएस) और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एसपीसीबी) द्वारा इनका समय-समय पर निरीक्षण और समीक्षाएं की जाती हैं। प्रचालन शुरू होने के समय से कार्यस्थलों और आस-पास के वातावरण की विकिरणकीय निगरानी निरंतर की जा रही है। निगरानी के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ है कि श्रमिकों और आम जनता को प्राप्त विकिरण मात्रा एईआरबी द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर है। हाल के वर्षों में झारखंड में यूसीआईएल संस्थापनाओं के आस-पास के गांवों में यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) द्वारा एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण कराया गया। सर्वेक्षण में कई गांवों को शामिल किया गया और बड़ी संख्या में ग्रामीणों की चिकित्सा जांच की गई। ग्रामीणों में पाए गए स्वास्थ्य संबंधी निष्कर्ष सामान्य प्रकृति के थें और समान सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों वाले ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर पाई

जाने वाली परिस्थितियों के समान थें। सभी पिछले अध्ययनों का प्रमुख निष्कर्ष यह था कि यूरेनियम खनन प्रचालन के आस-पास रोगों के स्वरूप को विकिरण उद्भासन से संबंधित नहीं माना जा सकता है।

(ग) यूसीआईएल, स्वास्थ्य भौतिकी इकाई (बीएआरसी) और अन्य नियामक एजेंसियों के समन्वय में झारखंड के यूरेनियम खनन क्षेत्रों में और उसके आस-पास स्वास्थ्य निगरानी, पर्यावरण निगरानी और स्थानीय समुदाय के कल्याण के लिए दीर्घ-कालिक उपायों का क्रियान्वयन कर रहा है। एईआरबी द्वारा निर्धारित मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए कार्यस्थलों पर विकिरण, पर्यावरणीय नमूनों (हवा, पानी, मिट्टी और भोजन), और व्यावसायिक उद्भासन की नियमित निगरानी की जाती है। श्रमिकों की स्वास्थ्य निगरानी और चिकित्सा जांच समय-समय पर की जाती है, जबकि आस-पास के गांवों के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य मूल्यांकन कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

यूसीआईएल अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) कार्यक्रमों के तहत विभिन्न सामुदायिक कल्याण पहलों को भी लागू करता है, जिसमें स्थानीय समुदायों के लिए सुरक्षित पेयजल, स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं, स्वच्छता, शिक्षा, कौशल विकास और बुनियादी ढांचे का विकास शामिल है। इसके अलावा, जन जागरूकता बढ़ाने के लिए समय-समय पर विकिरण संरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें ग्रामीणों, ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों, मीडिया कर्मियों, स्कूल शिक्षकों, छात्रों और यूसीआईएल और स्वास्थ्य भौतिकी इकाई (बीएआरसी) के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी रहती है।

*****